أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلَّذِى حَآجَّ إِبْرَٰهِـۧمَ فِى رَبِّهِۦٓ أَنْ ءَاتَىٰهُ ٱللَّهُ
ٱلْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَٰهِـۧمُ رَبِّىَ ٱلَّذِى يُحْىِۦ وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا۠
أُحْىِۦ وَأُمِيتُ ۖ قَالَ إِبْرَٰهِـۧمُ فَإِنَّ ٱللَّهَ يَأْتِى بِٱلشَّمْسِ مِنَ
ٱلْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ ٱلْمَغْرِبِ فَبُهِتَ ٱلَّذِى كَفَرَ ۗ وَٱللَّهُ لَا
يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٢٥٨﴾ أَوْ كَٱلَّذِى مَرَّ عَلَىٰ قَرْيَةٍ وَهِىَ
خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحْىِۦ هَٰذِهِ ٱللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۖ
فَأَمَاتَهُ ٱللَّهُ مِاْئَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُۥ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۖ قَالَ لَبِثْتُ
يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَل لَّبِثْتَ مِاْئَةَ عَامٍ فَٱنظُرْ إِلَىٰ
طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ وَٱنظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ
ءَايَةً لِّلنَّاسِ ۖ وَٱنظُرْ إِلَى ٱلْعِظَامِ كَيْفَ نُنشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا
لَحْمًا ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُۥ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ
﴿٢٥٩﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِـۧمُ رَبِّ أَرِنِى كَيْفَ تُحْىِ ٱلْمَوْتَىٰ ۖ قَالَ أَوَلَمْ
تُؤْمِن ۖ قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِى ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ
ٱلطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ ٱجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا
ثُمَّ ٱدْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَٱعْلَمْ أَنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾

Theme	
Confrontation of Ibrahim and Namrud. Example of bringing dead to life. Ibrahim's question of life after death.	इब्राहीम और नमरूद का आमना-सामना। मुर्दों को ज़िंदा करने की मिसाल। इब्राहीम का मौत के बाद ज़िंदगी के बारे में सवाल।

Tarjumani	
Have you ever reflected upon the one (Namrud), who, because Allah had given a kingdom, argued with Ibraheem (Abraham) about his Rabb. When Ibraheem said: "My Rabb is He Who has power to give life and to cause death." He replied: "I too have the power to give life and to cause death." Ibraheem said: "Well, Allah causes the sun to rise from the east, just make it rise from the west." Thus, the unbeliever was confounded; Allah does not guide the wrongdoers. Or take another example of the one (Ezra) who passed by a town which had fallen down upon its roofs. He exclaimed: "How can Allah bring this dead township back to life?" Thereupon, Allah caused him to die, and after one hundred years brought him back to life. Allah asked: "How long did you remain here?" Ezra replied: "Perhaps a day or part of a day." Allah said:	क्या तुमने उस शख्स के हाल पर गौर नहीं किया जिसने इबराहीम से झगड़ा किया था? झगड़ा इस बात पर कि इबराहीम का रब कौन है, और इस बिना पर कि उस शख्स को अल्लाह ने हुकूमत दे रखी थी	जब इबराहीम ने कहा कि "मेरा रब वह है जिसके इखतियार में ज़िन्दगी और मौत है" तो उसने जवाब दिया, "ज़िन्दगी और मौत मेरे इखतियार में है |" इबराहीम ने कहा, "अच्छा, अल्लाह सूरज को मशरिक से निकालता है, तू ज़रा उसे मगरिब से निकल ला |" यह सुनकर वह मुनकिरे-हक़ शशदर रह गया	मगर अल्लाह ज़ालिमों को राहे-रास्त नहीं दिखाया करता	या फिर मिसाल के तौर पर उस शख्स को देखो, जिसका गुज़र एक ऐसी बस्ती पर हुआ, जो अपनी छतों पर औंधी गिरी पड़ी थी	उसने कहा, "यह आबादी जो हलाक हो चुकी है, इसे अल्लाह किस तरह दोबारा ज़िन्दगी बख्शेगा?" इसपर अल्लाह ने उसकी रूह कब्ज़ कर ली और वह सौ बरस तक मुर्दा पड़ा रहा	फिर अल्लाह ने उसे दोबारा ज़िन्दगी बख्शी और उससे पुछा, "बताओ, कितनी मुद्दत

"Nay! You have remained here for one hundred years: now just have a look at your food and drink; they are not rotten; and then look at your donkey and see that his very bones have decayed. We have done this to make you a Sign for mankind. Look at the bones of your donkey, how We bring them together then clothe them with flesh and bring it back to life! When this all was shown clearly to him, he said: "Now I know that Allah has power over everything." Yet, another example is when Ibraheem said: "My Rabb! Show me how you give life to the dead." He replied: "Have you no faith in this? Ibraheem humbly submitted: "Yes! But I ask this to reassure my heart." Allah said: "Take four birds; cause them to incline towards you (train them to follow your direction), cut them into pieces and scatter those pieces on hilltops, then call them back: Allah will bring them back to life and they will come to you	पड़े रहे हो?'' उसने कहा, "एक दिन या चन्द घंटे रहा हूँगा |'' फ़रमाया, "तुमपर सौ बरस इसी हालत में गुज़र चुके हैं	अब ज़रा अपने खाने और पानी को देखो कि उसमें ज़रा तग्य्युर नहीं आया है	दुसरी तरफ़ ज़रा अपने गधे को भी देखो (कि इसका पंजर तक बोसीदा हो रहा है)	और यह हमने इसलिए किया है कि हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी बना देना चाहते हैं	फिर देखो कि हड्डियों के इस पंजर को हम किस तरह उठाकर गोश्त-पोस्त इसपर चढ़ाते है|'' इस तरह जब हक़ीकत उसके सामने बिल्कुल नुमायाँ हो गई, तो उसने कहा, "मै जानता हूँ कि अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है|'' और वह वाकिआ भी पेशे-नज़र रहे, जब इबराहीम ने कहा था कि "मेरे मालिक मुझे दिखा दे, तू मुर्दों को कैसे ज़िन्दा करता है|'' फ़रमाया, "क्या तू ईमान नहीं रखता?'' उसने अर्ज़ किया, "ईमान तो रखता हूँ, मगर दिल का इत्मीनान दरकार है|'' फ़रमाया, "अच्छा तो चार परिन्दे ले और उनको अपने से मानूस कर ले	फिर उनका एक-एक टुकरा एक-एक पहाड़ पर रख दे	फिर उनको पुकार, वे तेरे पास दौड़े चले आएँगे	

right away. Then know that Allah is All-Mighty, All-Wise.	खुब जान ले कि अल्लाह निहायत बाइकतीदार और हाकिम हैं|"
Tafsir	